संधि

निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए-

(i) सत्य + अर्थ =सत्यार्थ

अ + अ = आ

(iii) पर+ उपकार = परोपकार

अ + उ = ओ

(ii) महा + ईश = महेश

आ + ई = ए

(iv) सदा + एव = सदैव

आ+ ए = ऐ

उपर्युक्त पहले उदाहरण में सत्य + अर्थ के मेल से एक नया शब्द बना -सत्यार्थ।

यहाँ 'सत्य' के अंतिम स्वर 'अ' तथा 'अर्थ' के आरम्भिक स्वर 'अ' का मेल होने से एक नयी ध्वनि - 'आ' बनी है।

दूसरे उदाहरण में 'महा' + 'ईश' के मेल से एक नया शब्द बना - 'महेश'।

यहाँ 'महा' के अंतिम स्वर 'आ' तथा 'ईश' के आरम्भिक स्वर 'ई' का मेल होने से एक नयी ध्वनि-'ए' बनी है।

तीसरे उदाहरण में 'पर' + 'उपकार' के मेल से एक नया शब्द बना-'परोपकार'।

यहाँ 'पर' के अंतिम स्वर 'अ' तथा 'उपकार' के आरम्भिक स्वर 'उ' के मेल होने से एक नयी ध्वनि-'ओ' बनी है।

Scanned with CamScanner

चौथे उदाहरण में 'सदा' + 'एव' के मेल से एक नया शब्द बना-सदैव।

यहाँ 'सदा' के अंतिम स्वर 'आ' तथा 'एव' के आरम्भिक स्वर 'ए' के मेल होने से एक नयी ध्वनि-'ऐ' बनी है।

इस तरह एक शब्द के अंत की ध्वनि और साथ में मिलने वाले शब्द की आरम्भिक ध्वनि में संधि होती है।

अत: जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती हैं, तब वे एक नया रूप ग्रहण करती हैं, इस प्रक्रिया को संधि कहते हैं।

संधिविच्छेद

(i) सत्यार्थ = सत्य + अर्थ

(ii) महेश = महा+ ईश

(iii) परोपकार = पर + उपकार

(iv) सदैव = सदा + एव

ऊपर के उदाहरणों में दो वर्णों अथवा ध्वनियों के मेल से संधि की गयी थी किन्तु इन उदाहरणों म संधि के नियमों को हटाकर वर्णों को फिर पहली अवस्था में लाया गया है।

अत: दो वर्णों अथवा ध्वनियों के मेल से जो एक शब्द बनता है, उसे दुबारा से पहले वाली स्थिति में ले आना संधिविच्छेद कहलाता है।

संधि के भेद

(i) हिम + आलय = हिमालय : इसमें 'हिम' के अंतिम स्वर 'अ' तथा 'आलय' के आरम्भिक स्वर 'आ' स्वरों का मेल (अ + आ) हुआ है और एक नई ध्वनि 'आ' बनी है।

Scanned with CamScanner

अत: स्वरों का स्वरों के साथ मेल होने पर उनमें जो परिवर्तन आता है, उसे स्वर संधि कहते है। यह संधि का पहला भेद है।

(ii) जगत् + नाथ = जगन्नाथ : इसमें 'जगत्' के अंतिम 'त्' और 'नाथ' के आरम्भिक 'न' अर्थात दो व्यंजनों 'त्' + 'न' की संधि से 'न्न' एक नया रूप बना है।

जगत् + ईश = जगदीश : इसमें एक व्यंजन 'जगत्' के अन्तिम 'त्' तथा एक स्वर 'ईश' के आरम्भिक 'ई' की संधि से 'दी' नामक एक नया रूप बना है।

अत: व्यंजन और व्यंजन अथवा स्वर और व्यंजन के मेल से व्यंजन में जो परिवर्तन आता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं। यह संधि का दूसरा भेद है।

विशेष : 'त्' के बाद कवर्ग, तवर्ग, पवर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण, 'य', 'र', 'व' या कोई स्वर आ जाए तो 'त्' को 'द्' हो जाता है।

(iii) नि: +धन = निर्धन – यहाँ 'नि:' के अंत में विसर्ग (:) का मेल 'धन' के आदि में 'ध' के साथ होने पर 'र्ध' एक नया रूप बना है।

नि:+आशा = निराशा – यहाँ 'नि:' के अंत में विसर्ग (:) का मेल 'आशा' के आदि में 'आ' स्वर के साथ होने पर 'रा' एक नया रूप बना है।

Scanned with CamScanner

अतः विसर्ग का मेल किसी स्वर अथवा व्यंजन के साथ होने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं। यह संधि का तीसरा भेद है।

वर्णों मे संधि करने पर स्वर, व्यंजन अथवा विसर्ग में बदलाव आ जाता है। अतः संधि तीन प्रकार की होती है-

संधि के भेद

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि

पाठ्यक्रम में केवल स्वर संधि ही है, अतः यहाँ स्वर संधि की विस्तार से चर्चा की जा रही है।

स्वर संधि

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

↓ ↓ ↓

अ + आ = आ

उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्य' के अंत में 'अ' स्वर निहित है और 'आग्रह' के आरम्भ में 'आ' स्वर है। इन दोनों स्वरों अर्थात 'अ' और 'आ' को मिलाने से 'दीर्घ आ' हो गया और 'सत्य + आग्रह' में संधि करने पर उसमें परिवर्तन होकर 'सत्याग्रह' शब्द बना।

अतः स्वर के बाद स्वर के मेल से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के पाँच भेद हैं-

(1) दीर्घ संधि (2) गुण सधि (3) वृद्धि संधि (4) यण् संधि (5) अयादि संधि।

Scanned with CamScanner

(1) दीर्घ संधि

(क) उदाहरण : मत + अनुसार = मतानुसार

↓ ↓ ↓

अ + अ = आ

दीर्घ का अर्थ है-बड़ा। इस संधि में जब दो एक समान वर्ण (ह्रस्व या दीर्घ) पास- पास आते हं, तो दोनों मिलकर उसी वर्ण का दीर्घ रूप बन जाते हैं। इसे दीर्घ संधि कहते हैं।

अन्य उदाहरण –

परम	+	अणु	=	परमाणु	अ	+	अ	= आ
छात्र	+	आवास	=	छात्रावास	अ	+	आ	= आ
परीक्षा	+	अर्थी	=	परीक्षार्थी	आ	+	अ	= आ
चिकित्सा	+	आलय	=	चिकित्सालय	आ	+	आ	= आ

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = अ या आ

पर स्वर = अ या आ

आदेश = आ

(ख) उदाहरण — रवि + इन्द्र = रवीन्द्र

↓ ↓ ↓

इ + इ = ई

Scanned with CamScanner

अन्य उदाहरण —

अति + इव	=	अतीव	इ + इ = ई
प्रति + ईक्षा	=	प्रतीक्षा	इ + ई = ई
नारी + इच्छा	=	नारीच्छा	ई + इ = ई
रजनी + ईश	=	रजनीश	ई + ई = ई

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = इ या ई
पर स्वर = इ या ई
आदेश = ई

(ग) उदाहरण - सु + उक्ति = सूक्ति

↓ ↓ ↓

उ + उ = ऊ

अन्य उदाहरण —

गुरु + उपदेश	=	गुरूपदेश	उ + उ = ऊ
सिंधु + ऊर्मि	=	सिंधूर्मि	उ + ऊ = ऊ
वधू + उत्सव	=	वधूत्सव	ऊ + उ = ऊ
सरयू + ऊर्मि	=	सरयूर्मि	ऊ + ऊ = ऊ

याद रखने योग्य : पूर्व स्वर = उ या ऊ
पर स्वर = उ या ऊ
आदेश = ऊ

प्रस्तुतकर्ता : डॉ.सुनील बहल
एम.ए.(संस्कृत,हिंदी),एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)

Scanned with CamScanner